श्री कर्मदहन विधान

-: मंगल आशीर्वाद :-

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108

श्री विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

एवं

समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य

108 श्री ज्ञान सागर जी मुनिराज

-: रचयित्री :-

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,

गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी

-: प्रकाशक :-

श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि०)

कृति : श्री कर्मदहन विधान
कृतिकार : गणिनी आर्यिका श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी
षष्टम् संस्करण : 2100 प्रतियाँ
प्रकाशन वर्ष : 2025
न्यौछावर राशि : 30.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)

प्राप्ति स्थान :

1. **राकेश जैन, महामंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 9650946696
2. **उमेश जैन, मंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 7982630514
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक, दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य प्रदेश)**
   दूरभाष : 9425726867
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 8824620107

Website - www.munisuvratswastidham.com
Instagram - munisuvrat_swastidham
Facebook - munisuvratswastidham
Youtube - swastidhamjahazpur

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर प्रथम 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज प्रथम 'छाणी' (उत्तर)

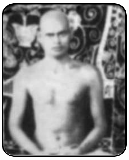

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (सन् 1888)
जन्म स्थान – छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम – श्री केवलदास जैन
पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती माणिक बाई
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – सन् 1923 (वि.सं. 1980), डूंगरपुर (राजस्थान)
आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण – 17 मई, 1944 (वि.सं. 2001), सागवाड़ा (राजस्थान)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज (प्रथम पट्टाचार्य)

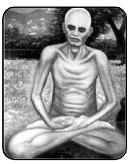

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं.1940(8 नवम्बर सन् 1883)
जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन
माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई
ऐलक दीक्षा – सन् 1924 (वि.सं. 1981), इन्दौर (मध्य प्रदेश)
मुनि दीक्षा – सन् 1924 (वि.सं. 1981), देवास (म.प्र.)
आचार्य पद – सन् 1928 (वि.सं. 1985), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण – सन् 1952 (वि.सं. 2009), डालमिया नगर (झारखंड)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री विजयसागर जी महाराज (द्वितीय पट्टाचार्य)

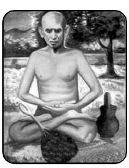

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (सन् 1881)
जन्म स्थान – सिरोली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई
क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा – नागौर, राजस्थान (आचार्य श्री सूर्यसागर जी से)
आचार्य पद – लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण – सन् 1962 (वि.सं. 2019), ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

पूरज पूज्य आचार्य 108 श्री विमलसागर जी महाराज 'भिण्ड' (तृतीय पट्टाचार्य)

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (सन् 1892)
जन्म स्थान – मोहिना,जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री किशोरीलाल जैन
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती मथुरा देवी
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1941 (वि.सं. 1998), झालरापाटन (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – सन् 1943 (वि.सं. 2000), कोटा (राजस्थान)
आचार्य पद – सन् 1973 (वि.सं. 2030), हाड़ोती (राजस्थान)
समाधिमरण – सन् 1973 (वि.सं. 2030), सांगोद (राजस्थान)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य आचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज (चतुर्थ पट्टाचार्य)

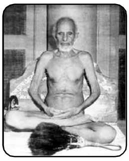

जन्म तिथि — आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (22 अक्टूबर, 1917)
जन्म स्थान — श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम — श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम — श्री छिद्दूमल जैन
माता का नाम — श्रीमती चिरोंजी देवी
ऐलक दीक्षा — सन् 1968 (वि.सं. 2025), रेवाड़ी (हरियाणा)
ऐलक दीक्ष गुरू — आचार्य विमलसागर जी महाराज
ऐलक नाम — श्री वीरसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा — सन् 1968 (वि.सं. 2025), गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
आचार्य पद — सन् 1973 (वि.सं. 2030), मुरैना (म.प्र.)
(आचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण — सन् 1994 (वि.सं. 2051), सोनागिरि सिद्धक्षेत्र (म.प्र.)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज (पंचम पट्टाचार्य)

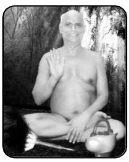

जन्म तिथि — अगहन वदी पंचमी, वि.सं. 2006 (10 नवम्बर 1949)
जन्म स्थान — बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम — श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम — श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम — श्रीमती सरोज देवी
क्षुल्लक दीक्षा — सन् 1972 (वि.सं. 2029)
मुनि दीक्षा — सन् 1988 (वि.सं. 2045), सोनागिरी सिद्धक्षेत्र
मुनि दीक्षोपरान्त नाम — मुनि श्री 108 सन्मतिसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू — आचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद — सन् 1989 (वि.सं. 2046), नरवर नगर (म.प्र.)
समाधिमरण — सन् 2013 (वि.सं. 2070), दिल्ली

सराकोद्धारक परम पूज्य आचार्य 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज (षष्टम पट्टाचार्य)

जन्म तिथि — वैशाख शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 2014 (1 मई, 1957)
जन्म स्थान — मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम — श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम — श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम — श्रीमती अशर्फी देवी
ब्रह्मचर्य व्रत — सन् 1974 (वि.सं. 2031)
क्षुल्लक दीक्षा — सन् 1976 (वि.सं. 2033), सोनागिरि स्द्धिक्षेत्र
क्षु. दीक्षा गुरू — आचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम — क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा — सन् 1988 (वि.सं. 2045), सोनागिरि सिद्धक्षेत्र
मुनि दीक्षोपरान्त नाम — मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू — आचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद — सन् 1989 (वि.सं. 2046), सरधना (मेरठ)
आचार्य पद — सन् 2013 (वि.सं. 2070), बड़ागाँव (बागपत)

परम पूज्य गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि — 1-11-1969
जन्म स्थान — छिंदवाडा (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम — संगीता (गुड़िया)
पिता का नाम — श्री मोती लाल जैन
वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम — श्रीमती पुष्पा रानी जैन
वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
लौकिक शिक्षा — एम. ए. (संस्कृत)
दीक्षा गुरू — आ. श्री 108 विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान — 24 जनवरी 1996 (इटावा)
दीक्षा नाम — आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण

प्राक्कथन

–आ. 105 स्वस्ति भूषण माताजी

कर्मों की लीला है न्यारी, इनसे बचके ही रहियो।
ये रूला-रूला कर मारेंगे, तुम देखते रहियो ॥

भगवान श्री पारसनाथ पर घोर उपसर्ग हुआ, भगवान श्री आदिनाथ को 6 महीने तक आहार नहीं मिला। अंजना को जंगल-जंगल भटकना पड़ा। सीता को अग्नि परीक्षा देनी पड़ी। मैना सुंदरी का विवाह एक कोढ़ी से हुआ। एक नहीं अनेक उदाहरण मिले कि कर्मों के आगे कभी किसी की नहीं चलती। संसार की गति विचित्र है। हंसता आदमी किस क्षण रो पड़े पता नहीं। सुखी आदमी किस क्षण दुखी हो जाये पता नहीं। स्वस्थ्य आदमी किस क्षण रोगी हो जाय, पता नहीं। कर्मों की लीला विचित्र है हर क्षण आदमी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। हर क्षण का परिवर्तन किसको किस स्थिति में ले जाकर खड़ा कर दे, पता नहीं।

भारत की भूमि पर कर्मों को काटने का उपाय भी संभव है। तपस्वी ऋषि-मुनि, यति-साधुओं ने कर्मों को काटने का पुरूषार्थ किया और कर्मों पर विजय प्राप्त की। इंसान की महान शक्ति ने आत्मा पर विजय प्राप्त कर निर्वाण प्राप्त किया। तपस्या की अग्नि में कर्मों का होम किया और आत्मा को परमात्मा बना दिया।

रंग को बदल कर तस्वीर को बदल देते हैं लोग,
कमान से निकला तीर बदल देते हैं लोग।
तुम तो अपने ख्यालात न बदल पाये,
बदलने वाले तो तकदीर बदल देते हैं लोग ॥

भगवान की भक्ति पूजा आरती से अनन्त गुणी कर्मों की निर्जरा होती है। आत्मा जिससे हल्कापन महसूस करती है।

ज्ञान को यदि पाना है तो आलस करना छोड़ दो,
ध्यान अगर करना है तो संसार से मुख मोड़ लो।
जो मिलेगा पुरुषार्थ से ही मिलेगा,
भक्ति के हथौड़े से कर्मों का महल तोड़ दो ॥

8 कर्मों की 148 प्रकृतियां होती हैं। इनके बीच अकेली आत्मा रही है एवं पिस रही है। अब इस आत्मा की आवाज भी सुननी है। हमने अब तक सबकी सुनी पर अपनी आज तक नहीं सुनी। इस दुखी आत्मा का इलाज देव शास्त्र गुरू रूपी डॉक्टर से करवाना चाहिये। इन कर्मों में कुछ प्रकृतियां पुण्य की हैं एवं कुछ पाप की हैं। वर्तमान में भगवान की भक्ति से पुण्य प्रकृतियों की वृद्धि करें एवं पाप का क्षय करते हुये तपस्या करके एक दिन मुक्ति को प्राप्त करें।

8 कर्मों की 148 प्रकृतियां

कर्म	प्रकृतियां के प्रकार
1. ज्ञानावरण	मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान, केवलज्ञान
2. दर्शनावरण	चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, केवलदर्शन
3. वेदनीय	साता वेदनीय, असाता वेदनीय
	मिथ्यात्व, सम्यक् मिथ्यात्व, सम्यक् प्रकृति।
4. मोहनीय	क्रोध, मान, माया, लोभ, अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, संज्वलन, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरूषवेद नपुंसकवेद
5. आयु	मनुष्य आयु, तिर्यंच आयु, नरक आयु, देव आयु
6. नाम	मनुष्यगति, देवगति, तिर्यंच गति, नरक गति आदि-आदि 93
7. गोत्र	उच्चगोत्र, नीचगोत्र
8. अंतराय	दानांतराय, लाभांतराय भोगांतराय, उपभोगांतराय, वीर्यांतराय।

मुक्तक

क्या रखा है इस दौलते जहान में,
क्या रखा है इस पक्के मकान में।
जहां पर रखा है वहां पर तू जाता नही,
एक बार भी चला गया तो फिर वापिस आता नहीं॥

तेजोमयि व्यक्तित्व की धनी आर्यिकारत्न श्री स्वस्तिभूषण माताजी

-डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत
(अध्यक्ष-अ.भा. शास्त्री परिषद्)

यों तो आर्यिकाओं और साध्वियों का बहुत बड़ा समुदाय भारत वसुंधरा पर जिनधर्म की प्रभावना कर रहा है। उनमें विलक्षण प्रज्ञा और प्रतिभा को धारण करने वाली आर्यिका माताओं का विशिष्ट स्थान है। उन्हीं प्रज्ञा और प्रतिभाशीला आर्यिकाओं में गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी का व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण और आकर्षक है। इनके जीवन में सरलता, विद्वत्ता, श्रद्धा और विवेक का अनूठा संयोग है। वह मधुर भाषिणी, शांतचेता और सदा प्रसन्न रहने वाली आर्यिका हैं। सदा स्वाध्याय, ध्यान, चिंतन, मनन अध्ययन - अध्यापन में लीन रहती हैं। मैत्री, करुणा, प्रमोद, माध्यस्थ भाव आपके जीवन के कण - कण में समाए हुए हैं। यही कारण है कि आपके जीवन में कटुता और क्रोध कषाय आदि का अभाव है। आप प्रत्येक व्यक्ति में गुण अवलोकन करती हैं और नीरस जीवन में भी सरसता के सम दर्शन करती हैं। आपके पीयूषवर्णी प्रवचनों ने लोगों में आस्था के दीप प्रज्वलित किए हैं। समाज के व्यक्तियों में अंधविश्वास, अंधपरम्परा, रूढ़िवाद, जातिवाद, स्वार्थ, अंधता, ऊंच-नीच विषयक विषमता आदि दुर्गुणों को हटाने में आपकी अहम भूमिका है। नैतिक उत्थान के लिए आप अहर्निश प्रयत्न करती रहती हैं।

आपने दीक्षा धारण करने के बाद भी शिक्षा निरंतर ग्रहण की है, क्योंकि दीक्षा के साथ शिक्षा भी आवश्यक है। बिना शिक्षा के दीक्षा में कोई चमत्कृति पैदा नहीं होती है। ज्ञानाराधना से साधक जीवन में निखार आता है, जो आपश्री के जीवन में आया। ज्ञानाराधन करते हुए आपने शताधिक ग्रंथों का लेखन किया है। भक्ति साहित्य में तो नई चेतना ही लाई है। बहुत विधान और पूजाओं का लेखन कर लाखों लाखों व्यक्तियों को जिनेन्द्र भक्ति में जोड़ा है। समवशरण विधान, सर्वतोभद्र विधान, सिद्धचक्रविधान, कल्पद्रुम विधान आदि महाविधानों के माध्यम से समाज को भक्ति आयोजन करने-कराने की प्रेरणा दी है। वहीं एक दिवसीय विधानों के माध्यम से भक्ति सरोवर में अवगाहन कराया है।

आपकी लेखनी लोकप्रिय है। आप निरंतर सरल, सरस, सुबोध लेखन करती हैं। काव्य क्षेत्र में 'बड़ा ही महत्व है' इस काव्य के माध्यम से तो जन-जन को लुभाने का कार्य किया है। सभी लोगों में माताजी द्वारा बोला और लिखा जाने वाला 'बड़ा ही महत्व है' बड़ा ही प्रिय है। लेखन शैली जितनी प्रभावक है, उतनी ही प्रभावक आपकी प्रवचन शैली है। प्रवचन करते हुए जब आपकी वाणी रूपी सरिता कल-कल छल-छल कर प्रवाहित होती है तो श्रोता गण आनंद से झूम उठते हैं। आपके प्रवचनों में अंतःकरण से निकले हुए उद्‌गार बहुत ही स्फूर्त सहज और स्वाभाविक होते हैं।

आपके जीवन की अनेक विशेषताएं हैं। अलौकिक शिक्षा में विशेष सम्मान प्राप्त कर धार्मिक शिक्षा की गहराइयों में पहुंची, आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुमान को प्राप्त किया। अपने गुरु सिंहरथ प्रवर्तक आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर महाराज की अनुकृति बनकर उन जैसे ही शताधिक रचनाएं कर गौरव बढ़ाया और लोकोत्तर रचना त्रिलोक तीर्थ के समान देवाधिदेव श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर की मनोहर चमत्कारी प्रतिमा को विराजित कर जहाजपुर में जहाजाकृति जैन मंदिर का निर्माण कराया जहाजपुर अतिशय क्षेत्र को त्रिलोक तीर्थ जैसी प्रसिद्धि प्राप्त कराने वाली आर्यिकाश्री स्वस्तिभूषण अपने आप में महान तेजोमयी व्यक्तित्व हैं। आपने अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा में चौबीसी निर्माण, सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि में सहस्रकूट जिनालय, झालरापाटन पाटन का जीर्णोद्धार, मुरैना में गुरुकुल, डोला जी अतिशय क्षेत्र का जीर्णोद्धार आपके निर्देशन में सम्पन्न हो रहा है एवं केशवराय पाटन प्राचीन तीर्थ का संपूर्ण नवीनीकरण भी आपके निर्देशन में हो रहा हैं।

इनके जीवन में सूर्य की तेजस्विता, चंद्रमा की शीतलता, सागर की गंभीरता, पृथ्वी की सहिष्णुता, कमल की निर्लिप्तता आकाश की शुभता है। जीवन में सद्‌गुणों का साम्राज्य है। आपकी आकृति में नम्रता है, प्रकृति में सहजता है और सेवा में निःस्वार्थता है। ज्ञान की गरिमा और आचार की मधुरिमा से आपका व्यक्तित्व जगमगा रहा है।

हमें गौरव है कि विद्वानों को सतत वात्सल्य प्रदान कर अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद् को अधिवेशन, अनेक संगोष्ठियों की प्रेरणादात्री विभूति संयम साधना के क्षेत्र में अभिनंदनीय व्यक्तित्व की धनी स्वस्ति भूषण माता जी के चरणों में बारंबार वंदामि।

श्री कर्मदहन विधान
(माण्डला)

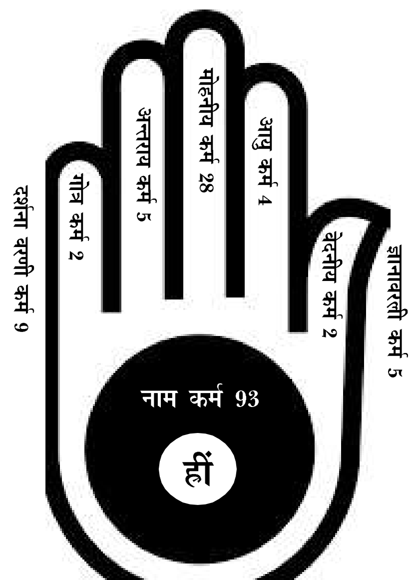

।। प्रशस्ति ।।

चौपाई

चारों गति के खाये फेरे, कर्मों के लागे हैं डेरे।
कर्म दहन जब तक न होगा, दुख सागर में लगेगा गोता ।1।

कर्मों से संसार बढ़ेगा, कर्मों से ही पाप चढ़ेगा।
कर्म हंसाये कर्म रूलाये, कर्म लेख कुछ समझ न आए।2।

कर्म ही जग में नाच नचाये, कर्म ही जीवों को भरमाये।
कर्मों की लीला है न्यारी, कर्म जीव पर होता भारी। 3।

कर्म सुलाये कर्म जगाये, चारों गति में लेकर जाये।
सुख-दुख कर्मों की परिभाषा, मुक्ति से न इसका नाता।4।

मुक्ति का यदि आनंद चाहो, तप अग्नि में कर्म जलाओ।
कीनी रचना ग्रीष्म काल में, किया बिहार था उसी हाल में।5।

संवत बीस सौ है चौबीस, कर्म दहन का मिला आशीष।
जहां जाये हम प्रभु हैं दिखते, उन भावों को पाठ में लिखते।6।

मूल कर्म के भेद आठ हैं, जग में कर्मों का ही ठाठ है।
इन कर्मों को यदि हटाना, कर्म दहन विधान कराना।7।

'स्वस्ति भूषण' मुक्ति चाहे, मिलती रहे मुक्ति की राहे।
सिद्ध शिला के वासी बनना, कर्म हरण कर मुक्ति वरना।8।

श्री कर्मदहन विधान

दोहा

तीर्थंकर चौबिस नमो, चिन्ह चरण पर शेष।
जय-जय वाणी से करे ऐसे सिद्ध विशेष ॥

स्थापना

ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति नाथ वंदन करता।
पद्य सुपारस चन्द्र पुष्प जी, पापो का क्रंदन हरता।

श्री शीतल, श्रेयांस, वासु जी, विमल मार्ग पंथा मिलता।
श्री अनंत श्री शांति कुंथु जिन, पाप हटा पुण्यों भरता।

कुंथु मल्लि अर मुनिसुव्रत जी, ज्ञान ध्यान के दाता हैं।
जो भी इनकी पूजा करता, उसे ही मिलती साता है।

अर नमि नेमि पार्श्व वीर जी, आओ तुम्हे हिरदय धरता।
कर्मदहन कर दो प्रभु मेरे, आश यही तुमसे करता।

दोहा

अरिहंत सिद्धाचार्य को, नमन अनंतो बार।
उपाध्याय सर्व साधु को, प्रणमूं बारंबार ॥

चाल छंद (तर्ज : तुम सम्मेद शिखर को जाइयो)

है सिद्ध अनंत महंता, पाया है मुक्ति पंथा ॥
सब आठों कर्म विनाशे, निज आनंद ज्ञान प्रकाशे ॥1॥

ज्ञानावरणी को नाशा, केवल का दीप प्रकाशा ॥
दर्शनावरणी को नाशा, केवल दर्शन अभिलाषा ॥2॥

प्राणी को मोह लुभाये, मदिरा सम उसे झुलाये ॥
तुम मोह से युद्ध है कीना, आतम अनंत सुख लीना ॥3॥

जब-जब कोई कार्य करे हैं, उसमें आ विघ्न पड़े हैं ॥
तुम अंतराय को नाशा, हुआ अनंत वीर्य का वासा ॥4॥

बंधन में बांध रखे हैं, गतियों में जाये फंसे हैं ॥
तुम आयु कर्म को नाशा, अवगाहन में किया वासा ॥15॥

सुख दुख की है परिभाषा, ये जीवन है इक गाथा ॥
कर वेदनीय का चूरा, नहि अव्याबाध अधूरा ॥6॥

सांचे सम तन को ढाले, है नाम कर्म के जाले ॥
आतम से दूर शरीरा, सूक्ष्मत्व प्रगट हुआ वीरा ॥7॥

ऊँचा नीचा करता है, जग ले घूमा करता है ॥
यह गोत्र कर्म बलिहारी, यह पीड़ा तुमसे हारी ॥18॥

कर्मों की लीला न्यारी, सारी दुनिया है हारी ॥
सिद्धों ने उसको नाशा, किया मुक्तिपुरी में वासा ॥9॥

दोहा

सर्व कर्म से मुक्त हो, सिद्ध निरंजन ईश।
कर्म दहन कर दो मेरे, तुम्हें नमाऊँ शीश ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट आव्हाननं
ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं
ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं

धत्ता छंद

निर्मल हितकारी, सब दुखहारी, जन्म जरा मृत्यु नाश करो ॥
निर्मलता आवे, मल धुल जावे, सिद्ध प्रभु जल चरण धरो ॥
पाऊँ शिवलक्ष्मी, सुख की रश्मि, कर्म को भस्मी आप करो ॥
यह कर्म कालिमा, टूटे जालिमा, मिटे लालिमा मुक्ति वरो ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने जलं नि. स्वाहा ॥1॥

पूजन को आया, चंदन लाया, चहुं दिश में यह महक गया ॥
मैं हृदय लुभाऊँ, कीरति गाऊँ, मन मेरा ये चहक गया ॥

पाऊँ शिवलक्ष्मी, सुख की रश्मि, कर्म को भस्मी आप करो ॥
यह कर्म कालिमा, टूटे जालिमा, मिटे लालिमा मुक्ति वरो ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने चंदनं नि. स्वाहा ॥2॥

अक्षत शुभ प्यारा, बना दुलारा, तेरे चरणों जब आया।
अक्षय पद पाऊँ, कर्म नशाऊँ, थाली भर अक्षत लाया ॥
पाऊँ शिवलक्ष्मी.....

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने अक्षतं नि. स्वाहा ॥3॥

जग काम से व्याकुल, करो निराकुल, अरि कुल मोहित करता है।
यह पुष्प निराला, बना के माला, चरण को शोभित करता है ॥
पाऊँ शिवलक्ष्मी.....

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने पुष्पं नि. स्वाहा ॥4॥

मन वच काया से, क्षुध माया से, तीन लोक चक्कर खाया।
यह भोजन शाला, इसको टाला, तेरे चरणों सुख पाया ॥
पाऊँ शिवलक्ष्मी.....

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नैवेद्यं नि. स्वाहा ॥5॥

दीपक उजियाला, तम न टाला, आत्म ज्ञान की ज्योति करो।
हे प्रभु अवधेशा, नाग नरेशा, अशुभ भाव को शीघ्र हरो ॥
पाऊँ शिवलक्ष्मी.....

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने दीपं नि. स्वाहा ॥6॥

यह धूप की क्यारी, अग्नि में जारी, कर्म धूम यह उड़ जावे।
शाश्वत पद पाऊँ, लौट न आऊँ, मुक्तिपुरी में बस जावे ॥
पाऊँ शिवलक्ष्मी.....

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने धूपं नि. स्वाहा ॥7॥

फल से आमंत्रण, करूं निमंत्रण, सिद्ध प्रभु तुम आ जाओ।
फल मैं ये पाऊँ, साथ में जाऊँ, जग से मुझको ले जाओ ॥
पाऊँ शिवलक्ष्मी.....

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने फलं नि. स्वाहा ॥8॥

अर्घ्यों से वंदन, मिटेगा क्रंदन, अर्घ्य बना कर ले आया।
तेरी यह महिमा, गुण गण गरिमा, गाने को सेवक आया ॥
पाऊँ शिवलक्ष्मी, सुख की रश्मि, कर्म को भस्मी आप करो ॥
यह कर्म कालिमा, टूटे जालिमा, मिटे लालिमा मुक्ति वरो ॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं नि. स्वाहा ॥9॥

जयमाला

(दोहा)

जग से नाता तोड़कर, आप हुये भगवान।
कर्म रहित मैं भी बनूं, बारंबार प्रणाम ॥

(तर्जः शेर चाल रू हे दीन बन्धू.....)

हे सिद्धशिला वासी तुम्हें नमस्कार है।
हे आत्म के विकासी तुम्हें नमस्कार है ॥
हे धर्म ध्वजाधारी तुम्हें नमस्कार है।
हे कर्म बंध दूर तुम्हें नमस्कार है ॥1॥

चौरासी लाख योनियों में घूमते हैं हम।
औ मोह की मदिरा को पीके झूमते हैं हम ॥
करके तपस्या आपने निज दीप जलाया।
ये कर्म थे कठोर इन्हें तुमने गलाया ॥2॥

मैं साधना करूँ तो साध्य तुम्हें बनाऊँ।
आराधना करूँ तो कर्म दूर भगाऊँ ॥
तुम मौन हो के बैठे प्रभु बोलते नही।
मुक्ति का द्वार मेरे लिये खोलते नही ॥3॥

फिर भी तुम्हारा भक्त ये खाली न जायेगा।
इस दर से सवाली कोई खाली न जायेगा ॥
थे चंदना और अंजना के तुम्ही सहारे।
श्रीपाल की नैया को आप पार उतारे ॥4॥

बालक को चढ़ा सर्प दंश आप उतारा।
भक्तों को भक्ती ज्ञान का अमृत है पिटारा ॥
संसार के दुख-दर्द को हम मौन से सहते।
गर आप न होते तो दर्द किससे ये कहते ॥5॥

हम ध्यान तपस्या करें सद् बुद्धि को देना।
आरोग्य, सौख्य, ज्ञान का भंडार भी देना ॥
चरणों की वंदना मैं प्रभु नित्य ही करूँ।
जो गुण अनंत आपके हैं ध्यान में धरूँ ॥6॥

औ आत्मा को जानूं सच्चा ज्ञान दीजिये।
मेरी करुण पुकार पर तो ध्यान दीजिये ॥
चरणों में दास आ पड़ा स्थान दीजिये।
सत् दर्श-आचरण का वरदान दीजिये ॥7॥

दोहा

कर्म दहन करना मेरे, कर्म वीर भगवान।
सिद्ध शिला में जा बसूँ, बारंबार प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्म दहन विधान से, धर्म की आये बहार।
करुणानिधि भगवान का, बरसे हम पर प्यार ॥
इत्याशीर्वाद परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

ज्ञानावरण कर्म विनाश अर्घ्य

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा : ज्ञानावरण को नाश के, मेटों सब अज्ञान।
आत्म ज्ञान के कारणे, शत-शत करूँ प्रणाम ॥

छंद चाल

मतिज्ञान पे परदा आया, तप द्वारा उसे हटाया।
मतिज्ञान की महिमा न्यारी, काटो ये कर्म की क्यारी ॥

ॐ ह्रीं मति ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।1 ।

फिर ज्ञान विशेष न होवे, मूरखता बीज है बोवे।
श्रुतज्ञान की महिमा न्यारी, काटो ये कर्म की क्यारी ॥

ॐ ह्रीं श्रुत ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।2 ।

मुनि अवधि ज्ञान के धारी, मम ज्ञान पे परदा भारी।
अवधि की महिमा न्यारी, काटो ये कर्म की क्यारी ॥

ॐ ह्रीं अवधि ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।3 ।

मन की सब बात है जाने, झूठी न किसी की माने।
मनः पर्यय महिमा न्यारी, काटो ये कर्म की क्यारी ॥

ॐ ह्रीं मनरूपर्यय ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।4 ।

तुम लोका लोक प्रकाशी, केवल की महिमा भासी।
केवल की महिमा न्यारी, काटो ये कर्म की क्यारी ॥

ॐ ह्रीं केवल ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।5 ।

शंभू छंद

ज्ञानावरणी निज ज्ञान न दे, अज्ञान अंधेरा छाया है।
तप त्याग परीषह सह करके, तुमने अज्ञान मिटाया है ॥

मति ज्ञानावरण के नाशन से, सुमति का फूल खिलाया है।
श्रुत ज्ञानावरण का घात किया, श्रुत ज्ञान का दीप जलाया है ॥

कुअवधि का वध कर-करके, सुअवधि की कीमत आंकी है।
मनः पर्यय ज्ञानावरण नशा, मनः पर्यय ज्ञान की झांकी है ॥

अरिहंत महंत नमंत हुये, केवल अज्ञान नशा करके।
फिर केवल ज्ञान की ज्योति जली, सब भाग गई थी निशा उर से ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दर्शनावरण कर्म विनाश अर्घ्य

दोहा

दूजा दर्शनावरण है, दर्शन होन न देत।
अनंत दर्शन के धनी, पूजो इस ही हेत।

शंभू छंद

चक्षु दर्शन हो आँखों से, संसार की वस्तु दिखती है।
पर कर्म उदय आ जाने पर, इन्द्रिय यह काम न करती है ॥
ये कर्म बड़े बलवान प्रभो, जीवों को नाच नचाते हैं।
हो आप कर्म से रहित प्रभों, चरणों में शीश झुकाते हैं ॥

ॐ ह्रीं चक्षु दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।1।

मन से मिलकर इन्द्रिय ये ही, अनुभव सुख दुख का देती है।
रसना अरू संग में घ्राण कर्ण, अपने विषयों को कहती है ॥
ये कर्म बड़े बलवान प्रभो.....

ॐ ह्रीं अचक्षु दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।2।

शासन से शासित अवधि ज्ञान, तप द्वारा पाया जाता है।
कर्मों ने डेरा डाला है, जिससे यह मन भरमाता है ॥
ये कर्म बड़े बलवान प्रभो.....

ॐ ह्रीं अवधि दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।3।

अरमानों के स्वर ये निकले, हम आश लगाये बैठे हैं।
केवल केवल का साथ मिले, केवल यह अर्जी करते हैं ॥
ये कर्म बड़े बलवान प्रभो, जीवों को नाच नचाते हैं।
हो आप कर्म से रहित प्रभों, चरणों में शीश झुकाते हैं ॥

ॐ ह्रीं केवल दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।4 ।

यह कर्म दर्शनावरण जीव, निद्रा निमग्न कर देता है।
अरिहंत देव निज ध्यान करें, पर उनकी ओर न लखता है ॥
ये कर्म बड़े बलवान प्रभो.....

ॐ ह्रीं निद्रा दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।5 ।

सोते को रहें जगाते पर, आवाज नही वह सुनता है।
निद्रा-निद्रा का आये उदय, वह गहरी नींद में सोता है ॥
ये कर्म बड़े बलवान प्रभो.....

ॐ ह्रीं निद्रा निद्रा कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।6 ।

बैठा ऊँघे झपकी लेवे, वह नींद के घेरे रहता है।
प्रचला है कर्म उदय आता, शुभ काम नही कर पाता है ॥
ये कर्म बड़े बलवान प्रभो.....

ॐ ह्रीं प्रचला कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।7 ।

मुख लार बहे और आंख झरे, सोते में गंदगी करता है।
प्रचलाप्रचला का तीव्र उदय, बेहोश सभी को करता है ॥
ये कर्म बड़े बलवान प्रभो.....

ॐ ह्रीं प्रचलाप्रचला कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।8 ।

सोते-सोते सब काम करे, पर होश नही उसको होता।
जब नीद खुलें तब पता नही, सपना समझे संकट सहता ॥

स्त्यानगृद्धि बलवान प्रभों, जीवों को नाच नचाते हैं।
हो आप कर्म से रहित प्रभों, चरणों में शीश झुकाते हैं ॥

ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।9 ।

शंभू छंद

जो धर्म देव को झूठ कहे, झूठे को सच्चा कहता।
जब कर्म दर्शना वरण बंधे, कर्मों के दुख वह सहता है ॥
जो भक्ति करे बन मतवाला, वह दर्श आपका लेता है।
यह कर्म दर्शनावरण धनी, यह आत्म दर्श न देता है ॥
चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन, केवल दर्शन को दूर करे।
जो चरण चिन्ह तेरे चलता, तेरा आश्रय भरपूर रहे ॥
बैठा ऊँघे चलता सोवे, यह इसी कर्म का भेद कहा।
सोते-सोते जो काम करे, वह तीव्र दर्शनावरण लहा ॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा ।

वेदनीय कर्म विनाश अर्घ्य

शंभू छंद

पूजा सेवा भक्ती करते, सुख साता-साता होता है।
शुभ पुण्य जीव के संग रहता, दुश्मन भी कुछ न करता है ॥1॥

ॐ ह्रीं साता कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।

व्यसनों में लीन जो रहता है, श्रद्धा न भक्ती भाव रहे।
वह अशुभ असाता कर्म उदय, जग में आ करके कष्ट सहे ॥2॥

ॐ ह्रीं असाता कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।

चाल छंद

सुख दुख जीवन की छाया, है कर्म वेदनी माया।
इक साता और असाता, दो भेद इन्ही के पाता ॥
जब होय उदय असाता, कोई रिश्ता न नाता।
भोगे यह प्राणी अकेला, बाकी सुख का है मेला ॥
प्राणी जब रोवे धोवे, बंधन असाता का होवे।
जिय भक्ति पूजा करेगा, शुभ साता स्वयं वरेगा ॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः पूर्णार्घं नि. स्वाहा।

मोहनीय कर्म विनाश अर्घ्य

छंद चौपाई

तत्वों से विपरीत है श्रद्धा, शुद्ध दृष्टि न होय बुद्धा।
यह मिथ्यात्व है पंच प्रकारा, सम्यक्ता को करे किनारा॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।1 ।

सम्यक्ता ने मिथ्या तोड़ा, समकित मिथ्या बना था जोड़ा।
इसमें से मिथ्यात्व हटाओ, सम्यक् ज्ञान उजेरा पाओ ॥

ॐ ह्रीं सम्यक् मिथ्यात्व कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।2 ।

श्रद्धा में कुछ कमी बताई, मिथ्या पूर्ण दोष न जाई।
सम्यक्ता को शुद्ध बनाओ, निज आतम की शरण में आओ ॥

ॐ ह्रीं सम्यक् प्रकृति कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।3 ।

जब-जब तीव्र क्रोध है आवे, धर्म मूल मिथ्या हो जावे।
भव अनंत में यह भटकावे, पार होने को शीश नवावे ॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्ध क्रोध कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।4 ।

देव धर्म गुरू का अपमान, अभिमानी करता है मान।
भव अनंत में यह भटकावे, पार होने को शीश नवावे ॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी मान कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।5।

आगम से छल करे पुमान, मन वच काया अंतर जान।
भव अनंत में यह भटकाय, पार होने को शीश नवाय ॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी माया कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।6।

लोभ कषाय अति बढ़ जाये, फिर निर्माल्य द्रव्य भी खाय।
भव अनंत में यह भटकावे, पार होने को शीश नवावे ॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी लोभ कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।7।

दोहा– अणुव्रत जिय जब न धरै, करता क्रोध है वार।
इसी अप्रत्याख्यान को, आप दियो निरवार ॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण क्रोध कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।8।

मानी मान न छोड़ता, न श्रावक व्रत धार।
इसी अप्रत्याख्यान को, आप दियो निरवार ॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण मान कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।9।

माया संग में पालकर, अव्रत श्रद्धा पाल।
अप्रत्याख्यान रहित प्रभो, चरण में नत हो भाल ॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण माया कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।10।

लोभ करे परेशान जब, देशव्रती न होय।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भाव से, सिद्धों सम सुख होय ॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान लोभ कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।11।

चौपाई

देशव्रती होकर के आये, प्रत्याख्यान क्रोध न जाये।
मोहचरित की प्रकृति सु नाश, प्रभुवर आप हुये अविनाश ॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरण क्रोध कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।12।

मुनि दीक्षा वह ले न पाये, प्रत्याख्यान मान न जाये।
मोहचारित की प्रकृति सुनाश, प्रभुवर आप हुये अविनाश ॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान मान कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।13।

श्रावक पद को पूर्ण निभाये, प्रत्याख्यान माया न जाये।
मोहचरित की प्रकृति सुनाश, प्रभुवर आप हुये अविनाश ॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान माया कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।14।

संग्रह करन के भाव न जाये, प्रत्याख्यान लोभ आ जाये।
मोहचरित की प्रकृति सु नाश, प्रभुवर आप हुये अविनाश ॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान लोभ कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।15।

भुजंग प्रयात छंद (तर्जः नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

रहे क्रोध कुछ तो यथाख्यात नाशे, महाव्रत लेकर नियम को प्रकाशे।
यही संज्वलन क्रोध गुरू ने बताया, सुनकर सुजश तेरे चरणों में आया॥

ॐ ह्रीं संज्वलन क्रोध कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।16।

रहे मान कुछ तो यथाख्यात नाशे, महाव्रत लेकर नियम को प्रकाशे।
यही संज्वलन मान गुरू ने बताया, सुनकर सुजश तेरे चरणों में आया॥

ॐ ह्रीं संज्वलन मान कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।17।

रहे माया कुछ तो यथाख्यात नाशे, महाव्रत लेकर नियम को प्रकाशे।
यही संज्वलन माया गुरू ने बताया, सुनकर सुजश तेरे चरणों में आया॥

ॐ ह्रीं संज्वलन माया कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।18।

ज्यों संज्वलन लोभ करता बिहारा, तभी घातिया ये बलवान हारा।
यही संज्वलन लोभ गुरू ने बताया, सुनकर सुजश तेरे चरणों में आया॥

ॐ ह्रीं संज्वलन लोभ कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।19।

चाल छंद

जब हास्य उदय में आवे, हंस-हंस कर जी खिल जावे।
तुम हास्य कर्म को नाशा, पाया पद सुख अविनाशा ॥

ॐ ह्रीं हास्य कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।20।

जब रति उदय में आवे, सबसे वह प्रीति लगावे।
तुम रति कर्म को नाशा, पाया पद सुख अविनाशा ॥

ॐ ह्रीं रति कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।21।

जब अरति उदय में आवे, सबसे नाराजी पावे।
तुम अरति कर्म को नाशा, पाया पद सुख अविनाशा ॥

ॐ ह्रीं अरति कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।22।

जब इष्ट अनिष्ट को पावे, मन में वह शोक मनावे।
तुम शोक कर्म को नाशा, पाया पद सुख अविनाशा ॥

ॐ ह्रीं शोक कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।23।

कोई भी कार्य करे है, हृदय में भय धरे है।
तुम भय कर्म को नाशा, पाया पद सुख अविनाशा ॥

ॐ ह्रीं भय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।24 ।

पर के अपराध बतावे, अपने निज दोष छिपावे।
जुगुप्सा को तुम नाशा, पाया पद सुख अविनाशा ॥

ॐ ह्रीं जुगुप्सा कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।125 ।

त्रिया के संग रमता है, बाकी में निज समता है।
तुम पुरूष वेद को नाशा, पाया पद सुख अविनाशा ॥

ॐ ह्रीं पुरूष वेद कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।26 ।

पुरूषों के संग मन भाता, बाकी में होती साता।
स्त्री वेद को तुम नाशा, पाया पद सुख अविनाशा ॥

ॐ ह्रीं स्त्री वेद कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।27 ।

नर नारी में है रमावे, अभिलाषा दोनों की पावे।
नपुंसक कर्म को नाशा, पाया पद सुख अविनाशा ॥

ॐ ह्रीं नपुंसक कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।28 ।

चौपाई

ज्यों मानुष मदिरा को पीवे, यथातथ्य न उसको दीखे।
मोह कर्म की है बलिहारी, आप कर्म से रहित बिहारी ॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यम् नि. स्वाहा ।

आयु कर्म विनाश अर्घ्य

दोहा

चार पुत्र हैं आयु के, नर नारक तिर्यंच।
देव गति शुभ जीव है, दुख न पावे रंच ॥

शंभू छंद

स्वर्गों का वैभव पाया था, भोगों में समय गंवाया था।
पर चाह नही पूरी होती, फिर एकेन्द्रिय तन पाया था ॥
तुम देव आयु से मुक्त सिद्ध, वंदन हम तुमको करते हैं।
आयु के बंधन से छूटे, हम यही भावना वरते हैं ॥

ॐ ह्रीं देव आयु विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।1 ।

संयोग वियोग हुये जितने, था इष्टानिष्ट का दुःख सहा।
कोई दीन दरिद्री बन बिलखा, न मानुष तन में सुःख लहा ॥
हो मनुज आयु से मुक्त सिद्ध, वंदन हम तुमको करते हैं।
आयु के बंधन से छूटे, हम यही भावना वरते हैं ॥

ॐ ह्रीं मनुष्य आयु विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।2 ।

परतंत्र हुआ तिर्यंच बना है, भूख प्यास बंध मार सही।
यह सारी कथा मेरे प्रभुवर, शास्त्रों से मैंने जान लई ॥
तिर्यंच आयु से मुक्त सिद्ध, वंदन हम तुमको करते हैं।
आयु के बंधन से छूटे, हम यही भावना वरते हैं ॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच आयु विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।3 ।

नरकों की कड़ी वेदना सुन, मनवा मेरा घबराता है।
बहुकाल सहे नरकों के दुख, अब मुक्तिपुरी की आशा है॥
तुम नरक आयु से मुक्त सिद्ध, वंदन हम तुमको करते हैं।
आयु के बंधन से छूटे, हम यही भावना वरते हैं ॥

ॐ ह्रीं नरक आयु विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यम् नि. स्वाहा ।4 ।

पूर्णार्घ्य

पाइता छंद (तर्ज : तुम सम्मेद शिखर....)

उपहार प्रहार वो देवे, संसार में खाये फेरे।
बंधन में बांध के राखे, वह ना स्वतन्त्र सुख चाखे ॥

नरकों में कष्ट उठाया, पशु गति में मार भी खाया।
अब दुःख सहा न जाये, तेरे चरणों में आये ॥

मानव बन साता न पाई, चिंता में रात गंवाई।
और देवआयु दुख पाया, छुटकारा पाने आया ॥

शुभ-अशुभ करम फल भोगे, मन वच-काया के योगे।
तुम आयु कर्म को नाशा, अवगाहन गुण परकाशा ॥

ॐ ह्रीं आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम कर्म विनाश अर्घ्य

पद्धरि छन्द

जिस कर्म उदय नर्कों में जाये, नाना विध के दुखों को पाये।
तुम नरक गति को नाश किया, निज आतम धर्म प्रकाश किया॥

ॐ ह्रीं नरक गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।1।

जिस कर्म उदय तिर्यंच बने, बंधन मारन के दुःख सने।
तिर्यंच गति को नाश किया, निज आतम धर्म प्रकाश किया ॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।2।

जिस कर्म उदय मनुष्य बने, सुख दुख पाये कुछ कर्म हने।
तुम मनुष्य गति को नाश किया, निज आतम धर्म प्रकाश किया।

ॐ ह्रीं मनुष्य गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।3।

स्वर्गों में जाकर सुख भोगे, सब भोग पुण्य के हैं योगे।
तुम देव गति को नाश किया, निज आतम धर्म प्रकाश किया॥
ॐ ह्रीं देव गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।4।

कामिनि मोहन छंद

मात्र एक स्पर्श एक इंद्रिय कही, भाव सामान्य साथ होता है सही।
पंच भेद थावरा गुरू की वाणी है, मन से ध्या इसे जीव कल्याणी है॥
ॐ ह्रीं एकेन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।5।

फर्स रस पाय के स्वाद को पावता, पांव भी आ मिले भूमि पर चालता।
द्वि इन्द्रिय कही गुरु की वाणी है, मन से ध्या इसे जीव कल्याणी है॥
ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।6।

स्पर्श रस साथ में गंध भी पावता, स्वाद के साथ में गंध भी आवता।
तीन इन्द्रिय कही गुरु की वाणी है, मन से ध्या इसे जीव कल्याणी है॥
ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।7।

स्पर्श रस गंध वर्ण इन्द्रिया मिल गई, पुण्य के उदय में शक्ति भी आ गई।
चार इन्द्रिय कही गुरु की वाणी है, मन से ध्या इसे जीव कल्याणी है॥
ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।8।

कर्म मिल करके पंच इन्द्रिया हुई, सैनी असैनी भेद दो कह गई।
पाँच इन्द्रिय कही गुरु की वाणी है, मन से ध्या इसे जीव कल्याणी है॥
ॐ ह्रीं पंचेन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।9।

चाल छंद

औदारिक तन मिल जावे, छेदा न कही भी पावे।
सिद्धों को सुख है पूरा, इनने कर्मों को चूरा ॥

ॐ ह्रीं औदारिक शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।10।

अणिमादिक ऋद्धी पावे, बहु नाना वेष बनावे।
अध्यातम ज्ञान की ज्योति, वैक्रियिक तन को है खोती ॥

ॐ ह्रीं वैक्रियिक शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।11।

मुनि तप से इसको पावे, आहारक नाम कहावे।
मन की शंका हैं खोते, निज ज्ञान बीज को बोते ॥

ॐ ह्रीं आहारक शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।12।

शुभ और अशुभ हैं होते, तैजस शरीर को कहते।
मुनि भाव सु फल को देते, इसको भी तप से लेते ॥

ॐ ह्रीं तैजस शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।13।

जब तक संसार में रहता, कर्मों के दुख को सहता।
कार्माण शरीर है पाता, चरणों में शीश नवाता ॥

ॐ ह्रीं कार्माण शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।14।

शंभू छंद (तर्ज : तीरथ करने चली सती...)

अंग और उपांगों की रचना, औदारिक तन जब होती है
संघात कर्म के नाम सहित, तन को पूरण यह करती है॥
तन से मन से प्रभु आप दूर, तुम सिद्ध शिला में जा बैठे।
ले अष्ट द्रव्य पूजा करते, भावों से ही तुमको लेखे ॥

ॐ ह्रीं औदारिक संघात नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।15।

नारक देवों में तन बनता, पर खून मांस नहिं होता है।
गति के अनुसार ही बनता है, वैक्रियिक शरीर यह होता है ॥
तन से मन से प्रभु....

ॐ ह्रीं वैक्रियिक संघात नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।16।

मुनिवर के मन में शंका हो, आहारक पुतला जाता है।
शुभ समवशरण में जा करके, शंका पूरी कर आता है ॥
तन से मन से प्रभु....

ॐ ह्रीं आहारक संघात नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।17।

जब आये किसी पर करुणा तो, जाकर के कार्य करे भारी।
जब क्रोध किसी पर आवे तो, जाकर अनिष्ट करता भारी ॥
तन से मन से प्रभु....

ॐ ह्रीं तैजस संघात नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।18।

जग में रह करके हे प्रभुवर, समझी कर्मों की परिभाषा।
कार्माण शरीर लगा संग में, छूटें तुमसे हमको आशा ॥
तन से मन से प्रभु....

ॐ ह्रीं कार्माण संघात नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।19।

चाल छंद (तर्ज : ऐ मेरे वतन के लोगों...)

ईटा गारा सम जुड़ता, औदारिक तन कुछ मुड़ता।
है नाम कर्म बलिहारी, सिद्धों की शोभा न्यारी ॥

ॐ ह्रीं औदारिक बन्धन नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।20।

न छिद्र कही पर पावे, तन विक्रिया का जुड़ जावे।
है नाम कर्म बलिहारी, सिद्धों की शोभा न्यारी ॥

ॐ ह्रीं वैक्रियिक बन्धन नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।21।

सुन्दर पुतला बनता है, आहारक तन जुड़ता है।
है नाम कर्म बलिहारी, सिद्धों की शोभा न्यारी ॥

ॐ ह्रीं आहारक बन्धन नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।22।

शुभ अशुभ कर्म के भेदा, तैजस शरीर न छेदा।
है नाम कर्म बलिहारी, सिद्धों की शोभा न्यारी ॥

ॐ ह्रीं तैजस बन्धन नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।23।

कर्मों का तन संसारी, कार्माण शरीर की क्यारी।
है नाम कर्म बलिहारी, सिद्धों की शोभा न्यारी ॥

ॐ ह्रीं कार्माण बन्धन नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।24।

(छन्द रोला)

जिन कर्मों के उदय वपु आकार बने हैं।
गुरूवर ने सिद्धांत यही संस्थान कहे हैं ॥
नीचे ऊपर सब सुंदर जो होय सो जानो।
समचतुरस्त्र संस्थान भेद है यही बखानो ॥

ॐ ह्रीं समचतुरस्त्रसंस्थान नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।25।

ऊपर से हो मोटा अरू नीचे पतला जानो।
परिमंडल न्यग्रोध यही संस्थान है मानो ॥
तन विभाव परिणति को प्रभु जी तुमने छोड़ा।
नमस्कार हम करें कर्म से नाता तोड़ा ॥

ॐ ह्रीं न्यग्रोध परिमण्डल संस्थान नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।26।

तन वापी सम ऊपर पतला नीचे हो मोटा।
स्वाति यह संस्थान गुरू ने कहा है खोटा ॥
तन विभाव परिणति को...........

ॐ ह्रीं स्वाति संस्थान नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।27।

मानव पीठ भी ऊँची हो, कूबड़ को पावे।
कुब्जक है संस्थान, गुरूवर यही बतावे ॥
तन विभाव परिणति को...........

ॐ ह्रीं कुब्जक संस्थान नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।28।

जिन कर्मों के उदय, जीव छोटा रह जावे।
वामन है संस्थान, गुरूवर यही बतावे ॥
तन विभाव परिणति को...........

ॐ ह्रीं वामन संस्थान नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।29।

टेढ़ा-मेढ़ा हो तन कुछ आकार न पावे।
हुंडक है संस्थान, पाप का उदय सतावे ॥
नीचे ऊपर सब सुंदर जो होय सो जानो।
हुंडक है संस्थान भेद है यही बखानो ॥

ॐ ह्रीं हुंडक संस्थान नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।30।

(चाल छंद)

औदारिक तन जब पाया, अंगोपांग सहित है आया।
है नाम कर्म बलिहारी, सिद्धों की शोभा न्यारी ॥

ॐ ह्रीं औदारिक शरीर अंगोपांग नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।31।

तन सुन्दर देव का होता, शुभ अंग मिले सुख बोता।
है नाम कर्म बलिहारी, सिद्धों की शोभा न्यारी ॥

ॐ ह्रीं वैक्रियिक शरीर अंगोपांग नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।32।

मुनि तन में रहत अहारा, शंका में करत विहारा।
है नाम कर्म बलिहारी, सिद्धों की शोभा न्यारी ॥

ॐ ह्रीं आहारक शरीर अंगोपांग नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।33।

शंभू छंद

जिन कर्मों के आ जाने पर, हाड़ों में विशेषता आती है।
संहनन उसे ही कहते हैं, मजबूती तन में पाती है ॥
हो वज्रमयी वेष्टन कीले और हड्डी संग में वज्र कही।
प्रभु इसी से आप विमुक्त हुये, हमने तेरी शरणा है गही॥

ॐ ह्रीं वज्रऋषभ नाराच संहनन नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।34।

कीले हों वज्र के हाड़ भी हो, पर वेष्टन वज्र नही होते।
है वज्र नाराच संहनन ये, इससे मुक्ति को नहिं पाते ॥
हो अंग उपांग रहित जिनवर, तेरे सुख का न पार कही।
प्रभु इसी से आप विमुक्त हुये, हमने तेरी शरणा है गही॥

ॐ ह्रीं वज्र नाराच संहनन नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।35।

संहनन न चारों गतियों में, नर तिर्यंचों में ही पाया है।
वेष्टन कीलक सामान्य रहे, नाराच संहनन गाया है ॥
हो अंग उपांग रहित जिनवर.......

ॐ ह्रीं नाराच संहनन नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।36।

जिस तन की हड्डी अर्द्धकीलित, वो अर्द्ध नाराच संहनन है।
यह नाम कर्म की बलिहारी, होता शरीर परिवर्तन है ॥
हो अंग उपांग रहित जिनवर........

ॐ ह्रीं अर्द्ध नाराच संहनन नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।37।

हड्डी मिलकर ही कीलित हो, कीलक संहनन कहलाता है।
चलता शरीर तो इससे भी, पर पूर्ण शक्ती न पाता है ॥
हो अंग उपांग रहित जिनवर..........

ॐ ह्रीं कीलक संहनन नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।38।

हड्डी नस से हो बंधी हुई, असंप्राप्ता संहनन होता है।
सबसे कमजोर रहे यह तो तप में न शक्ती खोता है ॥
हो अंग उपांग रहित जिनवर..........

ॐ ह्रीं असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।39।

दोहा

श्वेत रंग को धारते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं श्वेत वर्ण नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।40।

पीत रंग को धारते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं पीत वर्ण नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।41।

लाल रंग को धारते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं रक्त वर्ण नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।42।

हरित रंग को धारते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं हरित वर्ण नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।43।

कृष्ण रंग को धारते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं श्याम वर्ण नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।44।

गंध सुगन्ध को पावते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं सुगन्ध नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।45।

अशुभ गंध को पावते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं दुर्गन्ध नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।46।

स्वाद तिक्त को पावते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं तिक्त रस नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।47।

स्वाद कटुक को पावते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं कटुक नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।48 ।

स्वाद आम्ल को पावते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं आम्ल रस नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।49 ।

स्वाद मधुर को पावते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं मधुर रस नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।50 ।

स्वाद कषाय को पावते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं कषाय रस नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।51 ।

स्पर्श नर्म को पावते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं मृदु स्पर्श नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।52 ।

स्पर्श कठिन को पावते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं कठोर स्पर्श नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।53 ।

स्पर्श भार को पावते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं गुरू स्पर्श नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।54 ।

स्पर्श लघु को पावते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं लघु स्पर्श नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।55।

स्पर्श शीत को पावते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं शीत स्पर्श नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।56।

स्पर्श उष्ण को पावते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं उष्ण नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।57।

स्पर्श चिकण को पावते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं चिकण स्पर्श नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।58।

स्पर्श रूक्ष को पावते, नाम कर्म आधार।
चिन्मय हो चिद्रूप तुम, नमूं भक्ति उरधार ॥

ॐ ह्रीं रूक्ष स्पर्श नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।59।

शंभू छंद (तर्जः तीरथ करने चली सती...)

पंचेन्द्रिय जब मरण प्राप्त कर, नरक गति में जावत है।
विग्रह गति की चाल से चल, तन पूर्व आकार को पावत है ॥
यह नरक गती आनूपूर्वी, गतियों में लेकर जाता है।
आनंद मयी तुम सिद्ध भये, तुमको तो साता-साता है ॥

ॐ ह्रीं नरक गत्यानुपूर्वी नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।60।

निज काय छोड़कर अंत समय मर, पशु गती में जावत है।
विग्रह गति की चाल से चल, तन पूर्व आकार को पावत है ॥
यह तिर्यंच गती आनूपूर्वी, गतियों में लेकर जाता है।
आनंद मयी तुम सिद्ध भये, तुमको तो साता-साता है ॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच गत्यानुपूर्वी नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।61 ।

मिश्रण परिणामों से मरकर, जो मनुष्य गति में जावत है।
विग्रह गति की चाल से चल, तन पूर्व आकार को पावत है ॥
यह मनुष्य गती आनूपूर्वी, गतियों में लेकर जाता है।
आनंद मयी तुम सिद्ध भये, तुमको तो साता-साता है ॥

ॐ ह्रीं मनुष्य गत्यानुपूर्वी नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।62 ।

सम्यक्त्व मरण कर या कलेश कर, देवगति में जावत है।
विग्रह गति की चाल से चल, तन पूर्व आकार को पावत है ॥
यह देव गती आनूपूर्वी, गतियों में लेकर जाता है।
आनंद मयी तुम सिद्ध भये, तुमको तो साता-साता है ॥

ॐ ह्रीं देव गत्यानुपूर्वी नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।63 ।

चाल छंद (तर्जः ऐ मेरे वतन के लोगो...)

निज हाथ ही घात जो होवे, तन में निज चोट ही खावे।
उपघात कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं उपघात नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।64 ।

विष शस्त्र से घात करे है, पर प्राणों को जो हरे है।
परघात कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं परघात नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।65 ।

सूरज के सम जो रहता, आतप उसको ही कहता।
आतप कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं आतप नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।66 ।

जिन बिंब शशि का जानो, दोनों में शीत ही मानो।
उद्योत कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं उद्योत नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।67 ।

प्रतिक्षण आती जाती है, श्वांसों की यह बाती है।
उच्छवास कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं श्वासोच्छवास नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।68 ।

शुभ-अशुभ कर्म बलिहारी, आकाश की चाल है न्यारी।
विहायो गति कर्म बताया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं प्रशस्त विहायो गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।69 ।

टेढ़ा मेढ़ा चलता है, शुभ-शुभ ना वह लिखता है।
अप्रशस्त गति बताया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं अप्रशस्त विहायोगति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।70 ।

इक इन्द्रिय छोड़ शरीरा, द्वि इन्द्रियादि का तीरा।
त्रस नाम कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं त्रस नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।71 ।

एकहि इन्द्रिय को पावे, भव-भव में दुःख उठावे।
स्थावर कर्म बताया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं स्थावर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।72।

रोके से न रूकता है, हर ओर ठौर फिरता है।
यह सूक्ष्म कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्म नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।73।

जो रोके और रूके है, स्थूल-स्थूल कहे है।
यह बादर कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं बादर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।74।

जिसमें पूरणता आवे, शाक्ति शरीर की पावे।
पर्याप्त कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं पर्याप्त नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।75।

पर्याप्ति पूर्ण न होवे, अपना शरीर भी खोवे।
अपर्याप्त कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्त नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।36।

भारी होके न गिरे है, हल्का ऊँचा न उठे है।
गुरू लघुकर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघु नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।77।

जो एक शरीर को पावे, उसमें एक ही रह जावे।
प्रत्येक वपु बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येक शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।78 ।

एकहि तन को वो पाते, पर जीव अनन्त हैं रहते।
साधारण कर्म बताया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं साधारण शरीर नाम कर्म रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।79 ।

धातु उपधातु रहे हैं, स्थिरता को जो गहे हैं।
ये स्थिर कर्म बताया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं स्थिर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।80 ।

जो चलती फिरती होवे, वपु की निरोगता खोवे।
अस्थिर कर्म बताया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं अस्थिर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।81 ।

शुभ नाम कर्म जब आवे, सुन्दर अवयव को पावे।
शुभ नाम कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं शुभ नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।82 ।

वपु की घटती कांति है, मन में होती भ्रान्ति है।
यह अशुभ कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं अशुभ नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।83 ।

सब की प्रीति भारी है, चाहे दुनिया सारी है।
यह सुभग कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं सुभग नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।84 ।

धारे हैं गुण अनन्ता, चाहे न कोई सन्ता।
दुर्भग ये कर्म बताया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं दुर्भग नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।85 ।

शुभ अशुभ कर्म बलिहारी, आकाश की चाल है न्यारी।
विहायो गति बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं विहायो गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।86 ।

कोयल सी वाणी पावे, मीठी वाणी से गावे।
यह सुस्वर कर्म बताया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं सुस्वर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।87 ।

गर्दभ जैसी भाषा है, सुनता न कोई दासा है।
यह दुःस्वर कर्म बताया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं दुःस्वर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्य नि. स्वाहा ।88 ।

जब होत प्रभामई काया, यह नाम कर्म की माया।
आदेय कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं आदेय नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अयं नि. स्वाहा ।89 ।

नख केश वरण मुख रूखा, सारा शरीर है सूखा।
अनादेय कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं अनादेय नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।90 ।

चाहे गुण कम होवे हैं, पर सुजश सभी कहते हैं।
यह यशकीर्ति बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं यशःकीर्ति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ नि. स्वाहा ।91 ।

चाहे गुण खान भरा है, पर बनता सबका बुरा है।
अपयश कीर्ति बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं अपयशः कीर्ति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।92 ।

कारीगर सम रचता है, वह यह शरीर गढ़ता है।
निर्माण कर्म बतलाया, चरणों में शीश झुकाया ॥

ॐ ह्रीं निर्माण नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।93 ।

कल्याणक पंच मनावे, अठ प्रातिहार्य संग पावे।
तीर्थंकर वैभव पाया, शुभ समवशरण रचवाया ॥
तीर्थंकर प्रकृति जानो, सबसे ज्यादा शुभ मानो।
बस एक इसी की आशा, 'स्वस्ति' करे मुक्ति में वासा॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकर प्रकृति नाम कर्म रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा ।

है नाम कर्म की बलिहारी, रचना करता वपु की सारी।
नाशा है तुमने नाम कर्म, महिमा महान है आत्म धर्म ॥

इत्याशीर्वाद परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

गोत्र कर्म विनाश अर्घ्य

गीता छंद (तर्ज : प्रभु पतित पावन....)

पर प्रशंसा आत्म निंदा, जीव जो जग में करें।
उच्च गोत्र का बंध होवे, कार्य सिद्धि भी वरें ॥

ॐ ह्रीं उच्च गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ नि. स्वाहा ।1 ।

मिथ्यादृष्टि होय करके, जग में वो निंदा करे।
औ नीच गोत्र का बंध होवे, रात दिन चिंता करे॥

ॐ ह्रीं नीच गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ नि. स्वाहा ।2 ।

दोहा

दो प्रकृति है गोत्र की, उच्च नीच है होय।
पुण्य पाप का फल मिला, जैसा तूने बोय ॥

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

अंतराय कर्म विनाश अर्घ्य

शंभू छंद

दुनिया में दाता बहुत पड़े, पर देने का ना लाभ गहे।
देने के भाव तो जगते हैं, पर अंतराय हैं आगे खड़े ॥
तुम वीर बली तुम महाबली, कर्मों का काटा जाला है।
कार्यों की सिद्धी पूर्ण करी, पहनी मुक्ती की माला है ॥

ॐ ह्रीं दानांतराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ॥1॥

पुण्यों की महिमा भारी है, पर अंतराय बाधा देता।
शुभ लाभ यदि होना हो तो, वह बीच में बाधित कर देता ॥

तुम वीर बली तुम महाबली, कर्मों का काटा जाला है।
कार्यों की सिद्धि पूर्ण करी, पहनी मुक्ती की माला है ॥

ॐ ह्रीं लाभांतराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ॥2॥

साधन सुविधा सब प्राप्त हुये, भोगों की सब वस्तु पाई।
भोगांतराय का उदय हुआ, जी भरकर भोग नही पाई ॥
तुम वीर बली तुम महाबली, कर्मों का काटा जाला है।
कार्यों की सिद्धि पूर्ण करी, पहनी मुक्ती की माला है ॥

ॐ ह्रीं भोगांतराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ॥3॥

वस्त्राभूषण गाड़ी घोड़ा, सब पुण्य उदय से आया है।
मन में चिंता भारी रहती, यह चेतन भोग न पाया है ॥
तुम वीर बली तुम महाबली, कर्मों का काटा जाला है।
कार्यों की सिद्धि पूर्ण करी, पहनी मुक्ती की माला है ॥

ॐ ह्रीं उपभोगांतराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ॥4॥

शाक्ति अचिंत्य है आतम की, जग में इसका ना पार कही।
वीर्यान्तराय जब उदय होय, तब शक्ति क्षीण हो जाये वही ॥
तुम वीर बली तुम महाबली, कर्मों का काटा जाला है।
कार्यों की सिद्धि पूर्ण करी, पहनी मुक्ती की माला है ॥

ॐ ह्रीं वीर्यांतराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ॥5॥

दोहा

विघ्न पड़े शुभ काम में, अंतराय हो जान।
दुख चिंता बढ़ती रहे, कर्म से रहे अजान ॥

ॐ ह्रीं अंतराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

सम्पूर्ण जयमाला

दोहा

पक्ष-विपक्ष अलक्ष्य को, दूर किया है आप।
जिन प्रभु हिरदय आ बसो, करते तेरा जाप ॥

त्रोटक छन्द

कर्मों की लीला न्यारी है, निज आतम की छवि प्यारी है।
आठों कर्मों का यह समूह, संसार चक्र का रचे व्यूह ॥1॥
दुर्द्धर तप तुम घन घोर किया, आठों कर्मों को राख किया।
संसार कर्म का मेला है, बनता कर्मों का रेला है ॥2॥

अठ कर्मों की स्थिति असंख्य, तप द्वारा होवे इसका अंत।
ज्ञानावरणी का नाश किया, निज आतम दीप प्रकाश किया ॥
फैला चहुं दिग् में उजियाला, भर-भर पीया सम्यक् प्याला।
जब तक न ज्ञान की ज्योति जले, तब तक निश्चित संसार बढ़े ॥3॥

दर्शनावरणी प्रभु नाश दिया, चक्षु उघड़े निज आत्म हिया।
तुम लोका लोक प्रकाश दिये, निज आतम रूप निवार लिये ॥
फिर मोह की फौज भगाय दई, तब सुख अनंत की शांति लई।
अरि अतंराय को दूर किया, तब वीर्य अनंत प्रकाश लिया ॥4॥

अरू चार घातिया कर्म हने, अरिहंत देव जी आप बने।
शुभ समवशरण शुभ दिव्य ज्ञान, भविजन करते इसका है पान ॥
बचे चार अघाती कर्म रूप, समयावधि पा तुम बने भूप।
आठ कर्मों के नाश हार, मुक्ति वधु का मिलता है प्यार ॥15॥

पा अव्याबाध अवगाह रूप, अमूर्तिक हो सुन्दर स्वरूप।
अगुरू लघु गुण के आप धनी, मेरी तुमसे प्रभु आज बनी ॥

अंतिम तन को प्रभु त्यागा है, तन दूर आपसे भागा है।
आना-जाना, जाना-आना, सुख विध पाया तुमने नाना ॥6॥

तुम ज्ञान विशेष अशेष लहे, दुनिया के सारे क्लेश नशे।
किन्नर संगीत से भक्ति करें, तन न न तन नन सुरताल धरें ॥
सुर दुंदभि वीणा वाद्य बजा, भक्ती करते हैं भक्त सदा।
आनंद-आनंद ही छाया है, भक्ती का अमृत पाया है ॥7॥

तुम दीन दयाल कृपाल प्रभो, हम दुखिया दुख के मारे प्रभो।
अर्जी मेरी स्वीकार करो, वीरा मेरा उद्धार करो ॥
कर्मों का दहन करूं प्रभु जी, विनती मेरी इतनी सुन जी।
जग को तज शरणा आन गही, 'स्वस्ति' के प्रभु जी आप सही ॥8॥

दोहा

विनती करूं जिनेश की, हाथों को मैं जोड़।
'स्वस्ति' आशा पूरी हो, गिरि कर्मों का तोड़ ॥

ॐ ह्रीं कर्म दहन विधानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(इस अर्घ्य के साथ श्रीफल चढ़ायें)

दोहा

अष्ट कर्म को नष्ट कर, सिद्ध हुये हैं आप।
"स्वस्ति" प्रभु का नाम ले, कट जायेंगे पाप ॥
कर्मदहन विधान को विधि पूर्वक करवाये।
ऋद्धि सिद्धि मंगल भये, मोक्ष लक्ष्मी पाये ॥

इत्याशीर्वाद : पुष्पांजलिं क्षिपेत्

कर्मदहन-विधान के उपवास और जाप की विधि

कर्म के मूल भेद 8 हैं। उत्तरभेद 148 हैं। इनका दहन (नाश) करना हर भव्य आत्मा का कर्त्तव्य है। उस दहन की विधि तपस्या करना है, अनशन आदि तप करने से आत्मा में कषायों का नाश हो शांति और सुख का अनुभव होता है तथा आत्मा धीरे-धीरे कर्म-बन्धन से मुक्त हो सिद्ध हो जाता है।

इसीलिये कर्म की 148 प्रकृति को नष्ट करने के लिये 148 तथा अनन्त गुणों के साथ सिद्धों के मुख्य आठ गुण प्राप्त करने के लिये 8 इस प्रकार कुल 156 उपवास करना चाहिये।

ये उपवास जिस गुण-स्थान में जितनी कर्म-प्रकृतियों का नाश होता है, उसी गुण - स्थान की संख्या वाली तिथियों में कर्म-प्रकृतियों की संख्या के हिसाब से करना चाहिये। जैसे चौथे गुण-स्थान में सात प्रकृतियों का नाश होता है तो चौथ नग 7 में (हर चौथ को एक) कुल सात उपवास करना चाहिये। अर्थात—

क्रम से चौथ के 7, सप्तमी के 3, नवमी के 36, दशमी का 1, वारस के 17, चौदश के 85 इस तरह 148 तथा अष्टमी के 8 कुल मिलाकर 156 तिथियों में उपवास करना चाहिये।

इस तरह तीन साल साढ़े छह मास में यह व्रत पूर्ण होता है। हर एक उपवास के दिन भिन्न-भिन्न मन्त्रों की जाप (1 माला या 108 बार) देना चाहिये। जैसा कि आगे कहा गया है।

व्रत पूर्ण हो जाने के बाद उत्साहपूर्वक शक्ति के अनुसार उद्यापन करना चाहिये। श्री जिन मन्दिर जी में उपकरण और पात्रों को चार प्रकार

का दान देना चाहिये। मण्डल माड़कर पूजा करना और आगे के लिये धर्माराधन की प्रतिज्ञा करना चाहिये।

कर्म दहन विधान का मांडला पुस्तक में दिया गया है।

मांडला बनाकर ही विधान करना चाहिये।

चौथ के 7 उपवास के 7 मन्त्र

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं सम्यक्मिथ्यात्व-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं सम्यक्प्रकृति-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधी क्रोध कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी मान-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी माया कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी लोभ-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

सप्तमी के 3 उपवास के 3 मन्त्र

ॐ ह्रीं नरकायायुष्कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं तिर्यंचायुष्कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं मनुष्यायुष्कर्मरहित सिद्धाय नमः।

नवमी के 36 उपवास के 36 मन्त्र

ॐ ह्रीं निद्रानिद्रा-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं प्रचलाप्रचला-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं नरकगतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं तिर्यग्गतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वीनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं तिर्यग्गत्यानुपूर्वीनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं एकेन्द्रियनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं स्थावरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं आतपनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं उद्योतनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं परघात-नामकर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं सूक्ष्म-नामकर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणक्रोध-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमान-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमाया-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणलोभ-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणक्रोध-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमान-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमाया-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणलोभ-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद-मोहनीय कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं पुरुषवेद-मोहनीय कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं नपुंसकवेद-मोहनीय कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं हास्य-मोहनीय कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं रति-मोहनीय कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अरति-मोहनीय कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं शोक-मोहनीय कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं भय-मोहनीय कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं जुगुप्सा-मोहनीय कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं संज्वलन क्रोध-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं संज्वलन मान-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं संज्वलन माया-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

दशमी के उपवास का 1 मन्त्र

ॐ ह्रीं संज्वलनलोभ-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

बारस के 16 उपवास के 16 मन्त्र

ॐ ह्रीं निद्रा-दर्शनावरण कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं प्रचला दर्शनावरण कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं मतिज्ञानावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ श्री केवलज्ञानावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरण कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरण कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं दानान्तराय-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं लाभान्तराय-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं भोगान्तराय-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं औदारिकशरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

चौदश के 85 उपवासों के 85 मन्त्र

ॐ ह्रीं वैक्रियकशरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं आहारकशरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं तैजसशरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं कार्माणशरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं औदारिक बन्धननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं वैक्रियकबन्धननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं आहारकबन्धननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं तैजसबन्धननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं कार्माणबन्धननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं औदारिकसंघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं वैक्रियकसंघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं आहारकसंघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं तैजससंघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं कार्माणसंघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं औदारिकांगोपांगनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं वैक्रियकांगोपांगनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं आहारकांगोपांगनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थान-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं स्वातिसंस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं वामनसंस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं कुब्जकसंस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं हुण्डकसंस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहनन-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं नाराचसंहनननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अर्धनाराचसंहनननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं कीलकसंहनननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं असंप्राप्तासृपाटिकासंहनननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं श्यामवर्णनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं हरितवर्णनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं पीतवर्णनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अरुणवर्णनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं तिक्तरसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं कटुकरसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं मधुररसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं आम्लरसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं कषायरसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं मृदुस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं कठोर स्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं शीतस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं उष्णस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं रूक्षस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं स्निग्धस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं गुरूस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं लघुस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं सुगन्धनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं दुर्गन्धनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं देवगत्यानुपूर्वीनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्वीनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं प्रत्येकशरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं साधारणशरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं पर्याप्तिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अपर्याप्तिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं दुर्भगनाम कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं सुभगनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं आदेयनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अनादेयनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं उपघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं परघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं उच्छ्वासनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं शुभविहायोगतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अशुभविहायोगतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं स्थिरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अस्थिरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं शुभनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अशुभनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं सुस्वरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं दुःस्वरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अयशः कीर्ति-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं यशः कीर्ति-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं निर्माणनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं देवगतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं मनुष्यगतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं पञ्चेन्द्रियजातिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं त्रनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं बादरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर नाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं असातावेदनीय कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं सातावेदनीय कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं देवायुष्क-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं नीचगोत्र-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं उच्चगोत्र-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

इस प्रकार 148 कर्मप्रकृतियों का क्षय कर आत्मा मोक्ष चली जाती हैं फिर वह संसार में कभी नहीं आती। मुक्त आत्मा को सिद्ध कहते हैं। सिद्ध अवस्था में उसके अनन्तगुण प्रगट होते हैं। उनमें आठ गुण

मुख्य हैं। इन आठ गुणों के लिये अष्टमी के आठ उपवास करना चाहिये। प्रत्येक दिन क्रम से नीचे लिखे आठ मन्त्रों का जाप देना चाहिये।

अष्टमी के 8 उपवास के 8 मन्त्र

ॐ ह्रीं अनन्तसम्यक्त्व-गुणसहितं सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन-गुणसहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान-गुणसहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य-गुणसहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व-गुणसहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अमूर्तिकत्व-गुणसहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्व-गुणसहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं अव्याबाधत्व-गुणसहित सिद्धाय नमः।

आरती श्री कर्मदहन विधान

कर्मों को हरना स्वामी,
हमको अब तरना स्वामी
हम सब उतारे सिद्ध आरती
ओ भगवन हम...........

ज्ञानावरण और दर्शनावरण संग, मोहनीय को नाशा...
अंतराय को दूर किया तब केवल ज्ञान प्रकाशा।
तीनों लोको को जाना, भक्तों ने भगवन माना
हम सब................

वेदनीय औ आयु कर्म संग, नाम गोत्र भी भागे।...
कर्म रहित होकर के जिनवर, सिद्धालय में राजे।
सिद्धों की पदवी पाई, मुक्ति से राशि मिलाई
हम सब................
राग रहित हों द्वेष रहित हों, मोह भी मेरा छूटे।

अंतराय जो बीच में आवे, सारे बंधन टूटे।
कर्मों से मुझे बचाओ, चरणों में मुझे बिठाओ
हम सब................